इकाई -7. आधुनिक विज्ञान की कालसंबंधी अवधारणा

इकाई की रूपरेखा

7.0 अधिगम प्रतिफल

7.1 प्रस्तावना

7.2 आधुनिक विज्ञान का विकास और सृष्टि रचना

7.3 आधुनिक विज्ञान और एकरैखिक काल

7.4 बोध/अभ्यास प्रश्न

7.5 सारांश

7.6 शब्दावली

7.7 संस्तुत ग्रंथ सूची

7.0 अधिगम प्रतिफल

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद

- आधुनिक विज्ञान के विकास को समझ सकेंगे।
- आधुनिक विज्ञान में काल यानी समय के सिद्धांत को जान सकेंगे।
- आधुनिक विज्ञान पर ईसाई दर्शन के प्रभाव को समझ सकेंगे।
- काल की पाश्चात्य तथा भारतीय अवधारणा के अंतर को समझ सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

भारतीय कालगणना को पढ़ने के लिए कालगणना संबंधी आधुनिक विज्ञान के मत को जानना आवश्यक है। इसका एक प्रबल कारण यह है कि वर्तमान समय में इतिहास और समाजशास्त्र जैसे मानविकी के विषयों सहित शिक्षा की समस्त धाराओं में सभी व्याख्याएं आधुनिक विज्ञान के निष्कर्षों को ध्यान में रख कर की जाती हैं। उदाहरण के लिए यदि हमें मानव समाज के विकास के बारे में पढ़ना हो तो हमें आधुनिक विज्ञान की मनुष्य रचना यानी बंदरों से उसके विकास और प्रारंभिक मानवों के आदिम और पशुवत् होने के निष्कर्षों को आधार मान कर ही पढ़ाया जाता है। इसके विपरीत समस्त मतों को मिथक कह कर नकार दिया जाता है।

आधुनिक विज्ञान के सृष्टि रचना तथा मानव रचना संबंधी सभी निष्कर्ष किसी भी प्रकार के प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित नहीं हैं, जैसा कि वे हमेशा हरेक बात में दावा करते हैं। इन दोनों ही मामलों में उने निष्कर्ष उनके मिथ्या पूर्वाग्रहों और उनकी

रिलीजियस अवधारणाओं पर अवलंबित हैं। इस संबंध में हम इसी इकाई में विस्तार से आगे पढ़ेंगे। इन मिथ्या पूर्वाग्रहों और रिलीजियल अवधारणाओं के कारण उनकी कालसंबंधी मान्यताएं सीमित हो गई हैं। कालसंबंधी मान्यताओं के सीमित होने से मानव रचना और विकास संबंधी अवधारणाएं भी सीमित और त्रुटिपूर्ण हो गई हैं। इसके कारण मानवों का संपूर्ण इतिहास ही गलत लिखा जाने लगा है। इस संबंध में विस्तार से हम पाठ्यक्रम चार की इकाइयों में पढ़ेंगे।

7.2 आधुनिक विज्ञान का विकास और सृष्टि रचना

आधुनिक विज्ञान का विकास पिछले दो-ढाई सौ वर्षों में यूरोप में हुआ है। सामान्यतः विज्ञान प्रकृति के रहस्यों के ज्ञान को कहते हैं। प्रकृति के रहस्य हरेक देश, काल, परिस्थिति में समान ही रहते हैं। इनमें किसी को आधुनिक या यूरोपीय कहना गलत है। जैसे कि गुरुत्वाकर्षण अथवा जड़त्व का नियम प्रत्येक देश में समान रूप से कार्य करेगा और प्राचीन काल से लेकर भविष्य में भी करेगा। ऐसे में गुरुत्व के नियम को आधुनिक या प्राचीन कहना उचित नहीं जान पड़ता। परंतु प्रकृति के रहस्यों के प्रयोग से सिद्धांत, समीकरण और तकनीक का निर्माण देश, काल, परिस्थिति पर ही निर्भर करता है। जैसे कि भारतीयों ने आयुर्वेद का विकास किया, क्योंकि यहाँ जैवविविधता भरपूर है, परंतु यूरोप में जैवविविधता के अभाव के कारण उन्हें कृत्रिम रासायनिक चिकित्सा का विकास करना पड़ा। ऐसे में एलोपैथ का विज्ञान न केवल यूरोपीय है, बल्कि आधुनिक भी है। इसका जन्म मात्र सौ वर्ष पूर्व ही हुआ है।

उल्लेखनीय बात यह है कि रोम के पतन के बाद यानी लगभग चौथी शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी तक ज्ञान-विज्ञान और शिक्षा के मामले में यूरोप में अंधकार युग रहा है। उसके बाद वे पुनर्जागरण का काल मानते हैं, परंतु उसमें भी लगभग 18वीं शताब्दी, बल्कि 19वीं शताब्दी तक यूरोप में शिक्षण के नाम पर केवल थियोलॉजी यानी ईसाई सिद्धांत ही पढ़ाए जाते थे। रसायन तथा चिकित्सा शास्त्र में केवल हिप्पोक्रेटस था। विज्ञान नाम का कोई विषय तब नहीं होता था। इसलिए न्यूटन आदि जिन्हें हम वैज्ञानिक कहते हैं, उस समय ईसाई थियोलॉजिस्ट मात्र ही थे। यूरोप में अंकों का ज्ञान 13वीं शताब्दी में आया है। इन सभी बातों को ध्यान में रखें तो हम यूरोपीय विज्ञान की सीमा तथा उसके सिद्धांतों की सत्यता को ठीक से परख सकते हैं। यह भी ध्यान रहे कि उनके अधिकांश तकनीकि अनुसंधान मात्र कुछ सौ वर्ष पुराने ही हैं और साथ ही या तो वे अचानक पता चले हैं अथवा युद्ध के लिए किये गये हैं। वे सामान्य नागरिक विकास नहीं हैं। साथ ही उनमें से अधिकांश की जानकारी उन्हें भारत से ही मिली है, भले ही कुछ का श्रेय वे चीन को और शेष का श्रेय वे स्वयं को देते हैं। इन तथ्यों को उद्घाटित करती हुई ढेर सारी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।

जैसा कि हमने देखा है काल की अवधारणा सृष्टि रचना की अवधारणा से जुड़ी हुई है और यूरोप में वर्ष 1785 तक यह माना जाता था कि पृथिवी तथा वर्तमान सृष्टि मात्र छह हजार

वर्ष पुरानी है। हालाँकि उनके पास भारत से काल की प्राचीन गणनाएं जेसुइट पादरियों के माध्यम से पहुँच रही थीं, परंतु वे उन्हें स्वीकारने के लिए तैयार नहीं थे। फिर वर्ष 1785 जेम्स हट्टन ने कहना प्रारंभ किया कि पृथिवी लाखों वर्ष पुरानी है। यह बात उन्हें लगभग सौ वर्ष पूर्व से भारतीयों के माध्यम से पता थी, परंतु वे मानने के लिए तैयार नहीं थे। जेम्स हट्टन के बाद वहाँ चार्ल्स लाइल हुए, जिन्होंने पृथिवी आदि की आयु की गणना करने के सिद्धांत निकाले और इससे भूगर्भशास्त्र का जन्म हुआ। यह हम बाद की ईकाइयों में पढ़ेंगे कि भूगर्भशास्त्र तथा इनके सिद्धांतों की सीमाएं क्या हैं।

यहाँ केवल इतना ध्यान रखें कि आधुनिक विज्ञान की समस्त कालगणनाएं तथा अवधारणाएं ईसाई मत के प्रभाव में की गई हैं। वे स्वाधीन विचारक नहीं हैं। इस बात को हाइजेनबर्ग, श्रौडिंजर जैसे क्वांटम वैज्ञानिकों की पुस्तकों को पढ़ कर ही जाना तथा समझा जा सकता है। फ्रिट्जॉफ कॉप्रा जैसे भौतिकविज्ञानी भी क्वांटम सिद्धांतों की भारत के वैदिक तथा बौद्ध सिद्धांतों में पूर्व-उपलब्धता को बतलाते हैं तथा उसके माध्यम से ही समझने का प्रयास करते हैं। प्रो. चंद्रकांत राजू गणित और विज्ञान पर ईसाइयत की छाया को स्पष्ट करने के लिए दो पुस्तकें लिखी हैं – "पश्चिम में पैदा नहीं हुआ है विज्ञान" तथा "यूक्लिड एंड जीसस"।

चूँकि ईसाइयत ने सृष्टि रचना का विकास एकरैखिक माना है और उसमें काल की अवधारणा एकरैखिक है, इसलिए आधुनिक विज्ञान भी काल को एकरैखिक ही स्वीकार करता है। आधुनिक विज्ञान की सृष्टि रचना की अवधारणा न केवल एकरैखिक है, बल्कि उसमें और भी कई सारी समस्याएं हैं। आधुनिक विज्ञान सृष्टि की रचना की जितनी भी परिकल्पनाएं यानी हाइपोथिसिस प्रस्तुत करता है, वे पूर्णतः रोमांचक कल्पनाएं यानी फैन्टेसी मात्र ही हैं। कॉस्मोलॉजी के अधिकांश वैज्ञानिक लेखक इस बात को स्वीकार करते हैं कि ब्रह्मांड की रचना के बारे में वे केवल कुछ कल्पनाएं मात्र ही कर रहे हैं, जिनके पक्ष में कोई ठोस प्रमाण उनके पास नहीं हैं।

आधुनिक विज्ञान सृष्टि का आरंभ बिगबैंग यानी एक बड़े विस्फोट से मानता है। प्रसिद्ध विज्ञानी रोजर पेनरोज के अनुसार वर्तमान खगोलीय प्रमाणों का संकेत यही है कि हम जिस ब्रह्मांड को जानते हैं, वह एक बहुत ही बड़े विस्फोट से प्रारंभ हुआ था।[1] रोजर पेनरोज प्रसिद्ध विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग के साथी रहे हैं और ब्लैक होल सिद्धांत के जनकों में से एक हैं। बिगबैंग के सिद्धांत संबंध में प्रो. लिटिल लिखते हैं, "खगोलीय सिद्धांत ही बिगबैंग सिद्धांत का आधार है। बिगबैंग ही हमारे ब्रह्मांड के होने की सबसे सटीक व्याख्या है और इस पुस्तक का उद्देश्य इसके साबित करना है। बिगबैंग परिकल्पना हमारे ब्रह्मांड के निरंतर विकास करने का चित्र प्रस्तुत करती है जोकि वर्तमान की तुलना में भूतकाल में काफी भिन्न रहा है। प्रारंभ में इस परिकल्पना को एक स्थिर ब्रह्मांड की प्रतिस्पर्धी परिकल्पना के साथ जूझना पड़ा था, जिसका मानना था कि

[1] रोजर पेनरोज, फैशन, फेथ एंड फैंटेसी इन द न्यू फिजिक्स ऑफ द यूनिवर्स, पृष्ठ 217

ब्रह्मांड का विकास नहीं हो रहा है, बल्कि यह हमेशा से ऐसा ही रहा है।"[2]

बिगबैंग परिकल्पना की सबसे बड़ी कमी प्रो. लिटिल ने प्रारंभ में ही लिख दी है और वह है इसका ऐसे सिद्धांतों पर आधारित होना जो कि स्थानीय घटनाओं पर लागू नहीं होते, खंडित हो जाते हैं। ये सिद्धांत आकाश गंगा के स्तर पर भी लागू नहीं होते। ये सिद्धांत केवल और केवल संपूर्ण ब्रह्मांड पर ही लागू हो सकते हैं, यानी इन सिद्धांतों का प्रायोगिक परीक्षण नहीं किया जा सकता। यानी बिगबैंग परिकल्पना यूरोपीय विज्ञानियों की बाइबिल की भांति है, जिसे साबित तो नहीं किया जा सकता, परंतु जिसे माने बिना शेष सिद्धांतों की व्याख्या ही संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त यह परिकल्पना तो आधुनिक विज्ञान की इस स्थापना के भी विरुद्ध है कि बिना प्रायोगिक परीक्षण के किसी भी सिद्धांत या परिकल्पना को मान्य नहीं किया जाएगा।

यूरोपीय लोगों के लिए रिलीजियन का अर्थ केवल और केवल ईसाइयत ही है, और कुछ भी नहीं। इसलिए रिलीजियस टैक्स्ट के उदाहरण में उन्होंने केवल बाइबिल का उल्लेख किया। दूसरी बात यह है कि एस्ट्रोलॉजी भी केवल यूरोपीय एस्ट्रोलॉजी मात्र ही है। उसका भारतीय ज्योतिष से कोई लेना-देना नहीं है। तीसरी और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आधुनिक विज्ञान का पूरा पूर्वपक्ष ही ईसाइयत तथा यूरोपीय ज्ञानतंत्र है। उसका शेष दुनिया के ज्ञानतंत्र तथा परंपरा से कोई लेना-देना ही नहीं है। ऐसे में सत्य की खोज करने का उसका दावा मिथ्या साबित हो जाता है। अवलोकित तथ्यों से अनुमान करने के लिए ढेर सारे अन्यान्य ज्ञान का होना आवश्यक होता है। उस ज्ञान के अभाव में लगाए गए अनुमान सर्वथा मिथ्या परिणाम देते हैं। उदाहरण के लिए पृथिवी को थाली की भांति चपटी मानने वाले क्षितिज को देख कर अनुमान लगाते थे कि समुद्र में यात्रा करने से वे क्षितिज पर पहुँचने से नीचे गिर पड़ेंगे। इसलिए वे समुद्र में यात्रा करने से डरते थे। इसी प्रकार लगभग 11वीं शताब्दी तक यूरोप में प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर सूर्य को पृथिवी से आकार में छोटा ही माना जाता था। इससे यह स्पष्ट होता है कि अवलोकित तथ्यों के आधार पर अनुमान लगाने के लिए भी बहुत सारे ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है।

आधुनिक वैज्ञानिकों को भी यह कहना पड़ रहा है, "अति प्रारंभ का ब्रह्मांड, ब्रह्मांड का प्रारंभ प्रयोगात्मक रूप से तथा अवलोकन के स्तर पर अगम्य है, रहस्यों से भरा है और इसलिए इसमें अंधानुमान लगाने की संभावनाएं काफी अधिक बढ़ जाती हैं। ऐसे अनेक अंधानुमानों (एलेन गुथ का फुलाव का विचार, स्टीफन हॉकिंग का समयसीमा के अभाव, विशाल एकीकरण तथा सुपरस्ट्रिंग सिद्धांत का विचार,) को काफी अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है और ये सभी सैद्धांतिक कणभौतिकी और खगोलविज्ञान द्वारा गहन परीक्षण के विषय हैं। परंतु ये सभी अभी तक अंधानुमान मात्र ही हैं।"[3] इस उद्धरण में सभी वैज्ञानिक सिद्धांतों के लिए स्पेकुलेशन शब्द का प्रयोग किया गया है। स्पेकुलेशन का अर्थ

[2] एंड्रयु डी लिटिल, एन इंट्रोडॅक्शन टू द माडर्न कॉस्मोलॉजी, पृष्ठ 2

[3] वही, पृष्ठ VIII-IX

अंधानुमान होता है यानी कि ऐसे अनुमान जिनका कोई निश्चित आधार नहीं होता और जिनके सही होने की संभावना उनके गलत होने की संभावना जितनी ही होती है।

7.3 आधुनिक विज्ञान और एकरैखिक काल

काल की अवधारणा और थियोलॉजी यानी मजहबी पूर्वाग्रहों के संबंध को समझाते हुए प्रो. चंद्रकांत राजू लिखते हैं, "आत्मा का काल की अवधारणा से क्या लेना-देना है। आत्मा का काल से संबंध बनता है मृत्यु के पश्चात् के जीवन से। यदि समय अर्ध-चक्रीय होगा तो उसमें सामान्य अर्थों में मृत्यु के बाद भी जीवन होगा। मृत्यु के पश्चात् जीवन के बारे में चर्च ने पुनर्जन्म (मृत्यु के बाद बारंबार जन्म लेने की अवधारणा) को रिसरेक्शन यानी प्रलय के दिन पुनरोत्थान की अवधारणा में बदल दिया। ...समय की अवधारणा में यह बदलाव सदियों तक चलता रहा और यह वर्तमान भौतिकी में भी शामिल कर दिया गया है। स्टीफन हॉकिंग की कालसंबंधी पूरी अवधारणा काल की चक्रीय अवधारणा के सुविचारित खंडन पर आधारित है।"[4]

आधुनिक विज्ञान के एख बड़े व्याख्याता स्टीफन हॉकिंग काल की अवधारणा को समझाते हुए अपने आलेख एरो ऑफ टाइम में लिखते हैं, "मानव जीवन की तुलना में ब्रह्मांड का समय का पैमाना काफी बड़ा है। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि अभी हाल-हाल तक ब्रह्मांड को समय में अपरिवर्तनीय माना जाता था। दूसरी ओर यह स्पष्ट था कि समाज कल्चर और तकनीकी के मामले में विकास कर रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मानव जीवन का यह कालखंड कुछ हजार वर्षों से अधिक का नहीं हो सकता। अन्यथा हम अभी की तुलना में और अधिक विकसित होते। इसलिए यह मानना एकदम स्वाभाविक है कि मानव जाति और संभवतः पूरे ब्रह्मांड का प्रारंभ काफी हाल ही में हुआ हो। हालांकि कई लोगों ब्रह्मांड के प्रारंभ की अवधारणा से प्रसन्न नहीं होंगे, क्योंकि इससे किसी अतिमानवीय ताकत के अस्तित्व को मानना होगा जिसने इसकी रचना की। वे यह मानना पसंद करते हैं कि ब्रह्मांड और मानव जाति हमेशा से विद्यमान रहे हैं। मानव जाति के विकास का कारण वे नियमित अंतराल पर आने वाली बाढ़ों तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं को बताते हैं जिनके कारण मानव जाति बारंबार आदिम अवस्था में आ जाती है।"[5]

हॉकिंग इसके आगे जो लिखते हैं, उससे और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है कि वे मूलतः ईसाई अवधारणाओं को ही विज्ञान में घुसेड़ने का काम कर रहे हैं। वे लिखते हैं, "ब्रह्मांड का प्रारंभ है या नहीं, यह विवाद उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी में रहा था। इसे मुख्यतः थियोलॉजी और फिलॉसोफी के आधार पर चलाया जा रहा था और अवलोकित प्रमाणों को बहुत ही कम वजन दिया जा रहा था। शरारतपूर्ण तथा अविश्वसनीय स्वरूप वाले ब्रह्मांडीय अवलोकनों के आधार पर अभी हाल-हाल तक यह काफी प्रामाणिक माना

[4] डॉ. चंद्रकांत राजू, इलेवन पिक्चर्स ऑफ टाइम, भूमिका, पृष्ठ 19

[5] http://www.hawking.org.uk/the-beginning-of-time.html

जाता था। ब्रह्मांडविज्ञानी सर आर्थर एड्डिंगटन ने एक बार कहा था – 'यदि तुम्हारा सिद्धांत प्रत्यक्ष अवलोकनों के अनुकूल नहीं है तो चिंता मत करो. क्योंकि वे अवलोकन संभवतः गलत हैं।' परंतु यदि आपका सिद्धांत थर्मोडायनॉमिक्स के दूसरे नियम के प्रतिकूल है तो यह एक गंभीर समस्या है। वास्तव में यह मानना कि ब्रह्मांड हमेशा से उपस्थित था, थर्मोडायनॉमिक्स के दूसरे नियम के एकदम विपरीत है। यह नियम बताता है कि विकृति हमेशा समय के साथ बढ़ती जाती है। मानव के विकास के संबंध में यह बताता है कि इसकी अवश्य ही एक शुरुआत होनी चाहिए। अन्यथा यह ब्रह्मांड अभी तक पूर्ण विकृति की अवस्था में आ गया होता और हरेक वस्तु एक समान तापमान पर होती। एक अनंत और हमेशा विद्यमान ब्रह्मांड में प्रत्येक दृष्टि किसी तारे की सतह पर जाकर टिकेगी। इसका तात्पर्य यह होगा कि रात में आकाश सूर्य की सतह जितना ही चमकदार होगा। इस स्थिति को टालने का केवल एक ही उपाय है कि तारे एक खास समय के पहले नहीं चमकते।"[6]

यह नहीं पता कि आखिर स्टीफन हॉकिंग को किसने यह बता दिया कि इस सृष्टि का प्रारंभ नहीं है। सृष्टि का प्रारंभ तो है ही, परंतु जैसा कि वेद के अघमर्षण सूक्त में स्पष्ट किया गया है कि सृष्टि का निर्माण तथा विनाश एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है। यह हमेशा चलती रहती है। वहाँ कहा गया है – सूर्याचन्द्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयत्, दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथोस्वः।[7] सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, नक्षत्रादि दिव्य पदार्थ, अन्तरिक्ष आदि सभी की ईश्वर फिर से उसी प्रकार रचना करता है, जैसा कि उसने उन्हें पूर्व में रचा था। वेदों का यह निर्देश स्पष्ट कर रहा है कि ब्रह्मांड की रचना बारंबार होती है। यानी इसका प्रारंभ होता है, फिर यह नष्ट होता है और फिर से इसकी रचना होती है। परंतु समय यानी काल को एक तीर की भाँति सीधा तथा एकरैखिक मानने के कारण स्टीफन हॉकिंग इसे समझ पाने में असमर्थ हो रहे हैं।

आज भी भूगर्भशास्त्र की मूल समस्या यही है कि वह सृष्टि में होने वाले आंशिक प्रलयों तथा उसके बाद होने वाली पुनःसृष्टि को नहीं मानता। उसका मानना है कि 13 अरब वर्ष पहले बिगबैंग से सृष्टि का प्रारंभ हुआ और लगभग चार अरब वर्ष पहले पृथिवी की रचना हुई। परंतु वह यह नहीं बता पाता कि फिर मनुष्य का विकास होने में चार अरब वर्ष क्यों लगे? यदि पृथिवी चार अरब वर्ष पहले बन चुकी थी तो मनुष्यों का विकास कुछेक करोड़ वर्षों बाद हो जाना चाहिए था। परंतु मनुष्यों का विकास वे मात्र कुछ लाख वर्ष पूर्व का ही स्वीकार करते हैं। इसमें मूल समस्या काल को तीर की भाँति मानना है। यदि वे काल को चक्र की भाँति स्वीकार कर लेंगे तो इस समस्या का निराकरण सहजता से हो जाता है। इस बात को हम विस्तार से बाद की ईकाइयों में समझेंगे।

[6] http://www.hawking.org.uk/the-beginning-of-time.html

[7] ऋग्वेद 10/190/3

7.4 अभ्यास/ बोध प्रश्न

1. आधुनिक विज्ञान का विकास कहाँ हुआ?
   i. भारत में, ii. यूरोप में, iii. अमेरिका में, iv. चीन में
2. यूरोप में कितने वर्ष अंधकारयुग रहा?
   i) पाँच सौ वर्ष
   ii) सात सौ वर्ष
   iii) लगभग एक हजार वर्ष
   iv) 1200 वर्ष
3. आधुनिक विज्ञान में काल का स्वरूप किसके जैसा है?
   i. चक्र के जैसा, ii. वक्र रेखा के समान, iii. तीर के समान, iv. तरंगों के समान
4. निम्न में से कौन एरो ऑफ टाइम के लेखक हैं?
   i. अल्बर्ट आइंसटाइन, ii. रोजर पेनरोज, iii. स्टीफन हॉकिंग, iv. इनमें से कोई नहीं
5. आधुनिक विज्ञान के अनुसार ब्रह्मांड की रचना कब हुई?
   i. 4.32 अरब वर्ष पूर्व, ii. दो अरब वर्ष पूर्व, iii. 11 अरब वर्ष पूर्व, iv. लगभग 13 अरब वर्ष पूर्व

7.5 सारांश

मूल बात यह है कि वर्तमान सृष्टि के पहले और बाद के बारे में कुछ भी नहीं जानने के कारण आधुनिक विज्ञान ईसाइयत के सिद्धांत को ही मान कर चल रहा है। ईसाइयत भी वर्तमान सृष्टि से पहले और बाद के बारे में कुछ नहीं बताती। ईसाइयत आत्मा की अमरता को नहीं मानता, आधुनिक विज्ञान आत्मा को ही नकार देता है। ईसाइयत कयामत की चर्चा करती है तो आधुनिक विज्ञान डूम्स डे क्लॉक बनाए बैठा है और स्टीफन हॉकिंग जैसे विज्ञानी पृथिवी के नष्ट होने पर मंगल जैसे किसी ग्रह में बसने की योजना पर काम कर रहे हैं। आज विज्ञान यह मानने लगा है कि पृथिवी के अलावा भी ब्रह्मांड में जीवन है। इस बात को हमारे शास्त्र प्रारंभ से कहते आ रहे हैं।

7.6 शब्दावली

थियोलॉजी – ईसाइयत के सिद्धांत

बिगबैंग – महविस्फोट

एकरैखिक – एक सीधी रेखा के समान

भूगर्भशास्त्र – पृथिवी के गर्भ तथा चट्टानों का विज्ञान

7.7 संस्तुत ग्रंथ सूची

- इलेवन पिक्चर्स ऑफ टाइम, डॉ. चंद्रकांत राजू, नई दिल्ली
- ऐतिहासिक कालगणना, रवि शंकर, सभ्यता अध्ययन केंद्र, दिल्ली
- एन इंट्रोडक्शन टू माडर्न कॉस्मोलॉजी, एंड्रयू डी लिटिल
- फैशन, फेथ एंड फैंटेसी इन द न्यू फिजिक्स ऑफ द यूनिवर्स, रोजर पेनरोज
- http://www.hawking.org.uk/the-beginning-of-time.html

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY